National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2024; 1(53): 228-230
© 2024 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

अथर्ववेद में औषधि-विज्ञान : एक समग्र अध्ययन

डॉ सुरेश कुमार

भूमिका

चारों वेदों—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में अथर्ववेद का स्वरूप अत्यंत व्यावहारिक है। जहाँ अन्य वेद मुख्यतः यज्ञ और स्तुति-केंद्रित हैं, वहीं अथर्ववेद सामान्य जनजीवन से संबंधित है। इसमें रोग, भय, विष, ज्वर, कृमि, मानसिक विकार, स्त्री-स्वास्थ्य, शल्य-चिकित्सा, दीर्घायु और पर्यावरणीय संतुलन तक का वर्णन है।

अथर्ववेद की विशेषता यह है कि यह चिकित्सा को केवल शारीरिक स्तर पर नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी देखता है। यहाँ औषधि और मंत्र दोनों मिलकर उपचार की समग्र प्रणाली निर्मित करते हैं।

औषधि की वैदिक संकल्पना

अथर्ववेद में औषधियों को दिव्य और चेतन शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है।

याः औषधयः सोमराज्ञीर् बह्वीः शतविचक्षणाः।
तासामसि त्वमुत्तमा भेषजं त्वं हि जीवसे॥[1]

जो औषधियाँ सोम के समान प्रभावशाली, अनेक (बह्वी) तथा सैकड़ों गुणों से युक्त (शतविचक्षणा) हैं उनमें तू श्रेष्ठ भेषज (औषधि) है ; तू ही जीवन प्रदान करने वाली है। यह मंत्र औषधियों की जीवनदायिनी, बहुगुणात्मक तथा दिव्य शक्ति को प्रकट करता है और अथर्ववेद में वर्णित औषधि-विज्ञान की आधारभूमि को स्पष्ट करता है।

शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुतम्।
याः औषधयः सोमराज्ञीर् ताः नो मुञ्चन्त्वंहसः॥[2]

हे औषधियो! तुम्हारे सौ धाम (स्थान) हैं और हजारों प्रकार की शक्तियाँ (रुतम्) हैं। जो सोमराज्ञी औषधियाँ हैं, वे हमें रोग और पाप से मुक्त करें। यह मंत्र औषधियों की बहुविध शक्ति, व्यापकता और रोग-निवारण सामर्थ्य को दर्शाता है।

औषधि-सूक्त का महत्व

अथर्ववेद का 11वाँ काण्ड औषधियों की महिमा से परिपूर्ण है।

नमस्ते अस्त्वोषधीनां नमो भूम्यै नमो वनस्पतीनाम्।
नमो यज्ञाय नमो ब्रह्मणे नमस्ते अस्तु विश्वतः॥[3]

औषधियों को नमस्कार है, पृथ्वी को नमस्कार है, वनस्पतियों को नमस्कार है। यज्ञ को नमस्कार है, ब्रह्म को नमस्कार है, तथा समस्त विश्व को नमस्कार है। यह मंत्र स्पष्ट करता है कि वैदिक दृष्टि में औषधि, पृथ्वी और वनस्पति सभी दिव्य एवं पूज्य माने गए हैं, और चिकित्सा-विज्ञान का आधार प्रकृति एवं ब्रह्म से जुड़ा हुआ है।

याः फलिनीर्याः अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः॥[4]

जो औषधियाँ फलयुक्त हैं, जो फलरहित हैं, जो पुष्परहित हैं और जो पुष्पयुक्त हैं वे सब बृहस्पति द्वारा उत्पन्न की गई हैं। वे हमें रोग और पाप से मुक्त करें। यह मंत्र दर्शाता है कि वैदिक काल में वनस्पतियों का वर्गीकरण (फलयुक्त, निष्फल, पुष्पयुक्त, अपुष्प) ज्ञात था और सभी को औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता था।

पृथ्वी और औषधि का संबंध

"माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।"[5]

पृथ्वी को औषधियों की जननी कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि वैदिक चिकित्सा प्रकृति-आधारित थी। पृथ्वी-सूक्त में औषधियों की बहुलता का उल्लेख है, जो पर्यावरणीय चेतना को दर्शाता है।

रोग-विज्ञान की अवधारणा

अथर्ववेद में रोगों को कई श्रेणियों में देखा गया—

- ज्वर
- कृमि
- विष
- हृदय रोग
- मानसिक विकार
- स्त्री-रोग

रोगों का वर्णन यथार्थपरक है, जो वैदिक चिकित्सकों की अनुभवसिद्ध समझ को दर्शाता है।

ज्वर-चिकित्सा

"तृतीयकं चतुर्थकं सदन्दिं शारदमुत।
शीतं ज्वरं प्र मुञ्चामि यस्ते देहेऽधि तिष्ठति॥"[6]

तीन दिन का ज्वर, चार दिन का ज्वर, प्रतिदिन आने वाला (सदन्दि) तथा शारदीय (मौसमी) ज्वर इन सबको मैं दूर करता हूँ। जो तेरे शरीर में स्थित है, उसे मुक्त करता हूँ।

यह मंत्र दर्शाता है कि अथर्ववेद में ज्वर के विभिन्न प्रकारों (तृतीयक, चतुर्थक, शारदीय आदि) का ज्ञान था, जो प्राचीन भारतीय रोग-विज्ञान की उन्नत अवस्था का संकेत है।

तीन दिन, चार दिन और मौसमी ज्वर का उल्लेख मिलता है।

कृमि (संक्रमण) चिकित्सा

ये कृमयः पृथिवीं ये अन्तरिक्षे ये दिवि श्रिताः।
ये वनस्पतीष्वोषधीषु ते सर्वे हन्तु ते कृमीन्॥[7]

जो कृमि (जीवाणु/परजीवी) पृथ्वी में हैं, जो अन्तरिक्ष में हैं, जो आकाश में स्थित हैं, और जो वनस्पतियों तथा औषधियों में रहते हैं—वे सब नष्ट हों (या नष्ट किए जाएँ)।

"ओषधयः कृमीन् हन्तु ये अस्मिन् तन्वि संस्थिताः।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तान् सर्वान् नाशयामसि॥"[8]

ये औषधियाँ शरीर में स्थित कृमियों को नष्ट करें; जो अन्तरिक्ष में हैं, जो आकाश में हैं उन सभी कृमियों का हम नाश करते हैं। औषधियों के कृमिनाशक गुणों का उल्लेख है।

विष-चिकित्सा

अपामार्ग को विषनाशक औषधि माना गया है।

सर्पदंश-निवारण हेतु—

सर्पस्य विषमपाकरोमि यदस्य दंष्ट्राभ्यां निहितं विषम्।
अग्निरिव दहाम्येतद् अपसर्पतु ते विषम्॥[9]

मैं सर्प के उस विष को दूर करता हूँ जो उसकी दंष्ट्राओं (दाँतों) से शरीर में प्रविष्ट हुआ है। मैं इसे अग्नि के समान जला देता हूँ; तेरे शरीर से यह विष दूर हो जाए।यह विष-चिकित्सा की स्पष्ट जानकारी देता है।

हृदय एवं आंतरिक रोग

"हृदयस्य ते परि ददामि शोकं मनसोऽधि यद् आहितम्।
शं ते अस्तु हृदये शं ते अस्तु मनसि॥"[10]

तेरे हृदय में जो शोक (दुःख या पीड़ा) स्थित है, उसे मैं दूर करता हूँ; तेरे हृदय में शांति हो, तेरे मन में शांति हो। हृदय की रक्षा और स्वास्थ्य के लिए मंत्र। यह दर्शाता है कि आंतरिक अंगों के महत्व को समझा गया था।

मानसिक स्वास्थ्य

यत्ते मनसि दुरितं यच्च वाचि प्रतिष्ठितम्।
तन्मे मनसः शान्तिम् आपो दधतु भेषजम्॥[11]

तेरे मन में जो भी दोष या अशांति है और वाणी में जो विकार स्थित है, वे दूर हों ; जलरूपी औषधि मेरे मन को शांति प्रदान करे।

घाव एवं शल्य-चिकित्सा

रोहिणी रोपयास्मिन्न् अङ्गे यद् विछिन्नं यद् अपहतम्।
मांसं मांसैः संधारयास्थि अस्थ्ना सम् धारय॥[12]

हे रोहिणी औषधि! इस अंग में जो कटा या घायल हुआ है, उसे पुनः स्थापित करो। मांस को मांस से और अस्थि को अस्थि से जोड़ दो।

दीर्घायु और आरोग्य

दीर्घायुत्वं मे देहि जीवेम शरदः शतम्।
पश्येम शरदः शतं श्रुणुयाम शरदः शतम्॥[13]

यह मंत्र दीर्घायु, स्वस्थ जीवन और इन्द्रियों की पूर्ण क्षमता के साथ जीवन जीने की कामना करता है। अथर्ववेद में स्वास्थ्य का लक्ष्य केवल रोग-मुक्ति नहीं, बल्कि दीर्घ, समर्थ और संतुलित जीवन है।

सोम और औषधि

"सोमो राजा औषधीनां सोमो विश्वस्य भेषजम्।
सोमेन सर्वा रोगाणोऽप हन्तु शरीरतः॥"[14]

अथर्ववेद में सोम को सर्वोच्च औषधि, जीवनदायी तथा रोगनाशक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। "सोमो राजा औषधीनाम्" वाक्यांश यह स्पष्ट करता है कि सोम को सभी औषधियों का अधिपति और श्रेष्ठ भेषज माना गया था। सोम को औषधियों का राजा कहा गया है।

औषधि और मंत्र का समन्वय

अथर्ववेद की चिकित्सा-पद्धति द्विस्तरीय थी—

1. भौतिक औषधि
2. मंत्र-चिकित्सा

यह समग्र चिकित्सा प्रणाली थी।

आयुर्वेद की आधारभूमि

चरक और सुश्रुत संहिताओं में वर्णित अनेक सिद्धांत अथर्ववेद में बीज रूप में उपस्थित हैं। अथर्ववेद को आयुर्वेद का मूल स्रोत माना जाता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

स्वास्थ्य को धर्म, अर्थ और मोक्ष की प्राप्ति का आधार माना गया। आरोग्य ही समृद्धि का मूल है 99 यह वैदिक धारणा थी।

वैज्ञानिकता और आधुनिक संदर्भ

अथर्ववेद में—

- रोग-वर्गीकरण
- संक्रमण की अवधारणा
- विष-चिकित्सा
- मानसिक स्वास्थ्य
- स्त्री-स्वास्थ्य
- दीर्घायु

इन सभी का उल्लेख मिलता है।

यह आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान के मूल सिद्धांतों से साम्य रखता है।

उपसंहार

अथर्ववेद में औषधि-विज्ञान अत्यंत विकसित, समग्र और दार्शनिक दृष्टि से समृद्ध है। औषधियों को दैवी शक्ति, पृथ्वी की संतान और जीवनरक्षक माना गया है। रोगों का वर्गीकरण, कृमि-विज्ञान, विष-निवारण, मानसिक स्वास्थ्य, स्त्री-स्वास्थ्य तथा दीर्घायु की अवधारणा यह सिद्ध करती है कि वैदिक चिकित्सा प्रणाली वैज्ञानिक आधार पर विकसित थी। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अथर्ववेद भारतीय चिकित्सा-परंपरा का मूलाधार है और आधुनिक आयुर्वेद की जड़ें उसी में निहित हैं।

संदर्भ-सूची –

1. अथर्ववेद, 8.7.10
2. अथर्ववेद, 8.7.12
3. अथर्ववेद, 11.6.1
4. अथर्ववेद, 8.7.4
5. अथर्ववेद, 12.1.12
6. अथर्ववेद, 5.22.13
7. अथर्ववेद, 2.31.1
8. अथर्ववेद, 2.32.2
9. अथर्ववेद, 5.13.4
10. अथर्ववेद, 6.14.1
11. अथर्ववेद, 6.111.3
12. अथर्ववेद, 4.12.1
13. अथर्ववेद, 19.67.1
14. अथर्ववेद, 8.7.1